

## सैय्यद वंश (1414-1450)

- ☞ इस वंश के बारे में जानकारी के लिए एक मात्र स्रोत तारिख-ए-मुबारकशाही है। प्रमुख शासकों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है-
- ☞ खिज़्र खाँ (1414-1421) – यह सैय्यद वंश का संस्थापक था।
- ☞ इसने रैयत-ए-आला की उपाधी धारण किया था।
- ☞ इस शासक ने दौलत खाँ लोदी को पराजित किया था और तैमूरलंग के पुत्र शहरूप के प्रति वफादारी निभाते हुए नियमित रूप से उसको कर भेजता था।
- ☞ मुबारक शाह (1421-1434)– यह प्रथम शासक था, जिसने शाह की उपाधि धारण किया और अपने नाम का सिक्का जारी किया। इसने खोक्खर को पराजित कर दिया, जिसका नेता जसरथ था।
- ☞ इसके राज्य दरबार में याहिया-बिन-अहमद सरहिन्दी रहते थे, जिन्होंने तारिख-ए-मुबारकशाही की रचना किया था।
- ☞ इसने मुबारकाबाद नामक नये नगर का निर्माण कराकर उसका निरीक्षण कर रहा था। तब इसके वजीर सरवर-उल-मुल्क ने इसकी हत्या करा दिया।
- ☞ मुहम्मद शाह (1434-1445)– यह सरवर-उल-मुल्क के सहयोग से गद्दी पर आया, लेकिन इसने कमाल-उल-मुल्क को वजीर बना दिया और सरवर-उल-मुल्क की हत्या करा दिया।
- ☞ इसके समय में मालवा के शासक महमूद खिलजी ने दिल्ली की तरफ अभियान किया तब सुल्तान ने बहलोल-लोदी की सहायता के लिए बुलाया। परिणामस्वरूप मालवा का शासक वापस लौट गया। खुश होकर सुल्तान ने बहलोल लोदी को खान-ए-खाना ( यह वफादार ) की उपाधि प्रदान किया और उसे अपना पुत्र ( फर्जन्द ) कहकर संबोधित किया।
- ☞ अलाउद्दीन आलमशाह (1445-1450)– यह सैय्यद वंश का अंतिम शासक था। वजीर हामीद खाँ से अनबन होने के कारण सुल्तान दिल्ली से बदायूँ गया और वहीं पर 1476 में इसकी मृत्यु हुई।
- ☞ दिल्ली की गद्दी खाली होने पर हामीद खाँ ने बहलोल लोदी को आमंत्रित किया। दिल्ली पहुँचकर बहलोल लोदी ने हामीद खाँ की हत्या किया। सैय्यद वंश का अंत हुआ और लोदी वंश स्थापित हुआ।

## लोदी वंश (1451-1526)

- ☞ दिल्ली की गद्दी पर पहली बार तुर्कों को चुनौती देते हुए अफगानियों ने अपनी सत्ता को स्थापित किया। यह लोग अफगानिस्तान के गिलजाई कबीला के सबसे महत्वपूर्ण शाखा शाहुखेल से संबंधित थे। इसके प्रमुख शासकों का वर्णन निम्नलिखित हैं-
- ☞ यह लोदी वंश का संस्थापक था। यह वंश दिल्ली सल्तनत का अंतिम वंश था। इसके दरबारी कवि दाऊदी ने इसको उदार प्रवृत्ति का सुल्तान कहा है। दाऊदी के अनुसार यह अपने सरदारों को “मकसद-ए-अली” कहकर संबोधित करता था और उनके खड़े रहने पर स्वयं भी खड़ा रहता था और उनके बैठने के पश्चात् राज्य सिंहासन के बगल में नीचे बैठकर राजकीय कार्य को संपन्न करता था।
- ☞ यह दिल्ली की गद्दी पर अफगानी सत्ता को स्थापित करने वाला प्रथम सुल्तान था।
- ☞ इसने जौनपुर को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया, जो इसकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि था। जौनपुर को पूर्व का सिराज कहा गया है जहाँ पर शर्की वंश के शासकों ने अटाला देवी के मस्जिद का निर्माण कराया था। इसने ग्वालियर के शासक मानसिंह को पराजित करके 80 लाख टंका वसूल किया था।
- ☞ सिकंदर लोदी (1489-1517) – यह लोदी वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसने गद्दी पर आने के साथ भूमि का पैमाइश के लिए गज-ए-सिकन्दरी नामक पैमाना को जारी किया, जो 30 इंच का होता था। यह पैमाना मुगलकाल में भी चला।
- ☞ यह सुल्तान ‘गुलरुखी’ नामक से फारसी भाषा में कविताओं की रचना करता था। इसके समय में लज्जत-ए-सिकन्दरी, तिब्बी-ए-सिकन्दरी नाम से फारसी भाषा में ग्रंथ लिखा गया। मियाँ भुआ नामक विद्वान ने फरहंगे-सिकन्दरी ग्रंथ की रचना किया था। यह फिरोजशाह तुगलक के समान कट्टर सुल्तान था। इसने नगरकोट के ज्वालामुखी मंदिर के मूर्ति को तोड़कर मांस तौलने के लिए कसाइयों को दे दिया।
- ☞ इसने स्थापत्य कला के क्षेत्र में अपने पिता बहलोल लोदी का मकबरा बनवाया और इसके पुत्र इब्राहिम लोदी ने इसका मकबरा बनवाया। इसलिए प्रसिद्ध विद्वान पर्सीब्राउन ने लोदी वंश के काल को मकबरों का काल कहा है।
- ☞ इब्राहिम लोदी (1517-1526)– यह दिल्ली सल्तनत का और लोदी वंश का अंतिम शासक था। यह लोदी, फारमूली, नुहानी/लोहानी लोगों के समर्थन से गद्दी पर आया था, लेकिन अब इन्हीं लोगों को दबाने का कार्य शुरू किया जो पतन का कारण बना। मेवाड़ के शासक राणा सांगा ने 1517-1518 में दिल्ली के समीप घटोली के युद्ध में इसको पराजित कर दिया था।

- ☞ आलम खाँ लोदी और दिलावर खाँ लोदी ने भारत पर आक्रमण करने के लिए बाबर को आमंत्रित किया। कुछ विद्वान के अनुसार राणा सांगा ने भी आमंत्रित किया था। परिणामस्वरूप **1526** में पानीपत का प्रथम युद्ध हुआ। इस प्रकार लोदी वंश के साथ-साथ दिल्ली सल्तनत का अंत हुआ और मुगल वंश स्थापित हुआ।

### **तुगलक वंश (1320-1413)**

- ☞ खिलजी वंश के बाद दिल्ली की गद्दी पर तुगलक वंश स्थापित हुआ। इस वंश के शासक तुर्कों के करौना जाति से संबंधित थे। महत्वपूर्ण शासकों का वर्णन निम्नलिखित है-
- ☞ ग्यासुद्दीन तुगलक (1320-1325)- यह तुगलक वंश का संस्थापक था। इसका मुल नाम गाजी मलिक था, जो ग्यासुद्दीन तुगलक के नाम से गद्दी पर आया था। इसके व्यक्तित्व में "रस्म-ए-मियान" ( सख्ती, नरमी और संयम ) का समिश्रण था।
- ☞ इसने कर को घटाकर **1/10** या **1/11** भाग कर दिया।
- ☞ यह प्रथम सुल्तान था, जिसने सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण करवाया।
- ☞ इसके समय में मंगोलों ने **29** बार आक्रमण किया था और सभी को विफल कर दिया गया।
- ☞ यह प्रथम सुल्तान था जिसने 'गाजी' और "काफिरों का घातक" की उपाधि धारण किया था। इसने दिल्ली के समीप तुगलकाबाद नामक नये नगर का निर्माण कराया, जिसको **56** कोट का दूर्ग कहा गया है।
- ☞ प्रसिद्ध चिस्ती संत निजामुद्दीन औलिया के साथ इसका संबंध अच्छा नहीं था।
- ☞ सुल्तान को इंगित करते हुए निजामुद्दीन औलिया का कथन- "दिल्ली अभी दूर है" ( हूनज दिल्ली दूरस्थ )
- ☞ बंगाल अभियान से वापस लौटते समय दिल्ली के समीप अफगानुपर में लड़की के महल गिर जाने के कारण इसकी मृत्यु हो गई। जूना खाँ के निर्देश पर अहमद अयाज ने इस महल का निर्माण किया था। इसकी मृत्यु पर बरनी का कथन- "आसमान से अचानक बिजली गिरी और सुल्तान ढेर हो गया।"
- ☞ इब्नबतूता का कथन- "सुल्तान का हत्यारा स्वयं उसका पुत्र जूना खाँ था।"

### **मुहम्मद-बिन-तुगलक (1325-1351):**

- ☞ ग्यासुद्दीन तुगलक के बाद इनके पुत्र जूना खाँ मुहम्मद-बिन-तुगलक के नाम से गद्दी पर आया। दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों में यह सबसे शिक्षित, योग्य और विद्वान व्यक्ति था। फिर भी इसकी सभी योजना असफल हो गया। यह भूगोल, दर्शनशास्त्र, तर्कशास्त्र, नक्षत्रविज्ञान और ज्योतिष शास्त्र के क्षेत्र में सभी सुल्तानों में प्रमुख था।

- ☞ प्रसिद्ध विद्वान एलिफिन्स्टन महोदय ने मुहम्मद-बिन-तुगलक को पागल सुल्तान कहा है।
- ☞ इसके आदर्शवादी अभागा, रक्त पिपासु, विरोधाभासों का समिश्रण, धनवानों का राजकुमार और अभाग्यशाली सुल्तान भी कहा गया है। इसके योजनाओं को हमलोग निम्नलिखित रूपों में देख सकते हैं-
- ☞ दो-आब क्षेत्र में कर वृद्धि (1326-1327)- इसने दोआब क्षेत्र में 50% कर को लागू कर दिया। लेकिन इस क्षेत्र में अकाल पड़ गया। जब अधिकारियों ने जबरदस्ती कर वसूल करने का प्रयास किया तब इन लोगों ने विद्रोह कर दिया। सुल्तान ने इस आदेश को आपस ले लिया और किसानों के राहत के लिए एक विभाग की स्थापना किया।
- ☞ इसने अमीर-ए-कोही ( कृषि विभाग ) को स्थापित किया था।
- ☞ राजधानी परिवर्तन (1326-1327)- यह सुल्तान का सबसे विवदास्पद कार्य था।
- ☞ इसने दिल्ली से देवगिरी राजधानी परिवर्तन किये और इसका नाम दौलताबाद रख दिया।
- ☞ कुछ विद्वानों के अनुसार इसने दिल्ली के हिन्दुओं को दंडित करने के लिए राजधानी परिवर्तन किया था। अन्य विद्वानों के अनुसार मंगोल आक्रमण से बचने के लिए राजधानी परिवर्तन किया था।
- ☞ सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन (1329) - इसने जब सांकेतिक मुद्रा के प्रचलन को लागू किया तब टंका और जीतल का मूल्य एक समान हो गया, जिससे अर्थव्यवस्था में गड़बड़ी उत्पन्न हो गया और नकली सिक्का अधिक संख्या में बाजार में आ गया। फरिस्ता के अनुसार पीतल का और बरनी के अनुसार तांबा का सिक्का जारी किया गया था। इसके पूर्व चीन के शासक कुबलई खाँ और फारस के शासक गाईखाटू ने सफलता हो गया। इसने नकली सिक्का के बदले असली सिक्का देने की घोषणा किया। परिणामस्वरूप आर्थिक रूप से हानि उठाना पड़ा और जिनको नहीं मिला उन लोगों ने विद्रोह कर दिया।
- ☞ कराचिल और खुरासन अभियान (1335) - कराचिल के लिए इसने 10 हजार सैनिकों को भेजा लेकिन बरनी के अनुसार केवल 10 और इब्नबतूता के अनुसार केवल 3 सैनिक ही जीवित वापस आ सके। इसी प्रकार खुरासान अभियान के लिए 3 लाख 70 हजार सैनिकों को नियुक्त किया और एक साल का अग्रिम वेतन भी दे दिया, जिससे राजकोष रिक्त हो गया। दूसरी तरफ यहाँ के शासक अबु सइद से मित्रवत संबंध कायम हो जाने पर आक्रमण नहीं किया गया और जब सेना को भंग किया गया तब इन लोगों ने विद्रोहियों का साथ दिया। इस प्रकार इसकी सभी योजना असफल हो गई। जिसमें इसके भ्रष्ट अधिकारी भी दोषी थे। समय ने भी साथ नहीं दिया और सुल्तान होने के कारण यह भी दोष मुक्त नहीं थे।

### विविध तथ्य:

- ☞ इसने दिल्ली में जाँहपनाह नगर का निर्माण कराया था।
- ☞ इसने दिल्ली के समीप स्वर्गदुआरी नामक शिविर का निर्माण कराया और राजधानी बनाया।
- ☞ यह एकमात्र सुल्तान है जो होली के त्योहारों में शामिल होता था।
- ☞ इसी के समय में मोरक्कों का यात्री इब्नबतूता भारत आया था।
- ☞ इसी के समय में हरिहर एवं बुक्का ने स्वतंत्र विजयनगर राज्य की स्थापना 1336 में किया।
- ☞ इसी के समय में हसनगंगू ने 1347 में स्वतंत्र बहमनी राज्य की स्थापना किया।
- ☞ इसने रतन नामक हिन्दू को उच्च पद पर नियुक्त किया था।
- ☞ इसी के समय में तुगलक वंश के साथ-साथ दिल्ली सल्तनत की विघटन की प्रक्रिया शुरु हो गया।
- ☞ सिंध जाने के क्रम में थठ्ठा के समीप गोंडाल नामक जगह पर इसकी मृत्यु हो गई। इसकी मृत्यु पर बदायूनी का कथन-“राजा को अपनी प्रजा से और प्रजा को अपनी राजा से मुक्ति मिल गया।”

### फिरोजशाह तुगलक (1351-1388):

- ☞ तुगलक वंश का यह सबसे महत्वपूर्ण शासक था। हेनरी इलियट ने इसको दिल्ली सल्तनत का अकबर कहा है, लेकिन यह कट्टर सुल्तान के रूप में अपने को स्थापित किया। अपने भाई मुहम्मद-बिन-तुगलक की मृत्यु के बाद थठ्ठा के समीप अपना राज्याभिषेक करवाया और दिल्ली पहुँचकर इसने विधिवत रूप से राज्याभिषेक संपन्न करवाया।
- ☞ यह दिल्ली सल्तनत का एकमात्र सुल्तान था जिसका राज्याभिषेक दो बार हुआ था।
- ☞ इसने सभी क्षेत्रों में कार्य संपन्न किया जैसे-
- ☞ कृषि-इसने कृषि के क्षेत्र में सुधार किया और 24 प्रकार के कर को समाप्त करते हुए केवल चार कर रहने दिया। जैसे-खराज, जजिया, जकात, खुम्स। इसने सिंचाई व्यवस्था पर भी ध्यान दिया और नहरों का निर्माण कराया।
- ☞ दिल्ली सल्तनत में सबसे अधिक नहरों का निर्माण इसी ने कराया था।
- ☞ इसने दिल्ली के समीप 1200 फलों का बाग लगाया परिणामस्वरूप दिल्ली में फलों के मूल्य में बहुत कमी आ गया।
- ☞ इसने हक-ए-शर्ब या उश्र नामक सिंह नामक सिंचाई कर को लागू किया।

- ☞ शिक्षा एवं साहित्य- यह शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में रुचि रखना था। इसने अपनी आत्मकथा फतूहात-ए-फिरोजशाही की रचना किया। इसके राज्य दरबार में रहने वाले बरनी ने तारिख-ए-फिरोजशाही और फतवा-ए-जहाँदारी की रचना किया। इसके आदेश पर ज्वालामुखी मंदिर से लुटे गए 1300 संस्कृत ग्रंथों का फारसी भाषा में अनुवाद अप्पाउद्दीन नामक विद्वान ने दलायते फिरोजशाही के नाम से किया। औषधि शास्त्र पर आधारित सीरत-ए-फिरोजशाही की रचना भी इसके आदेश पर हुआ।
- ☞ मुद्रा व्यवस्था-इसने व्यापारिक लेन-देन को और सरल बनाने के लिए 'अब्दा एवं बिख' नामक छोटा-छोटा सिक्का को जारी किया था।
- ☞ सार्वजनिक कार्य- इसने सबसे महत्वपूर्ण कार्य इसी क्षेत्र में किया जैसे-
- ☞ इसने दिल्ली में एक सरकारी अस्पताल का निर्माण कराया, जिसको दार-उल-सफा कहा गया।
- ☞ इसने अनाथ मुस्लिम लड़की और बच्चों के लिए दीवान-ए-खैरात नामक विभाग की स्थापना किया।
- ☞ यह प्रथम सुल्तान था, जिसने बेरोजगारों को रोजगार देने के लिए रोजगार दफ्तर की स्थापना किया।
- ☞ यह प्रथम सुल्तान था, जिसने एक अनुवाद विभाग की स्थापना किया।
- ☞ यह प्रथम सुल्तान था, जिसने सरकारी धन उपलब्ध कराकर लोगों को हज की यात्रा पर भेजा।
- ☞ इन सभी पर निगरानी रखने के लिए इसने एक सार्वजनिक विभाग की स्थापना भी किया। दिल्ली सल्तनत के दूर-दराज क्षेत्रों में छोटे-छोटे अस्पताल, पीने के लिए कुआँ और पढ़ने के लिए मदरसा का निर्माण कराया था।
- ☞ दास प्रथा- यह दासों का सबसे बड़ा शौकीन था। इसके पास एक लाख 80 हजार दास थे। इसकी देखभाल के लिए दीवान-ए-बंदगान नामक विभाग को स्थापित किया।
- ☞ स्थापत्य कला- इसने 300 नये नगरों का निर्माण कराया। इसमें जौनपुर, फिरोजशाह, फतेहाबाद और हिसार आदि महत्वपूर्ण हैं। जौनपुर का निर्माण अपने भाई जूना खाँ की स्मृति में कराया था। इसका पंसदीदा नगर फिरोजशाह था। इसने दिल्ली में फिरोजशाह कोटला का निर्माण भी कराया और कुतुबमीनार का पूनर्निर्माण भी कराया। इसने अशोक के दो स्तंभलेख मेरठ और टोपरा ( हरियाणा ) से लेकर फिरोजशाह कोटला दूर में स्थापित किया।

- ☞ सैन्य व्यवस्था- इसके समय में सैन्य व्यवस्था कमजोर हुआ, क्योंकि इसने विभिन्न प्रकार का गलत निर्णय लिया। जैसे-
- ☞ इसने नगद वेतन के बदले पुनः भूमि देने की व्यवस्था को लागू कर दिया।
- ☞ इसने अलाउद्दीन खिलजी द्वारा ली गई सभी भूमि को पुनः वापस कर दिया।
- ☞ इसने भ्रष्टाचार को भी बढ़ावा दिया, क्योंकि इसने एक सैनिक को रिश्वत देने के लिए टंका अपने पास से दिया था।
- ☞ धार्मिक नीति- यह धर्म के मामले में कट्टर था। इसने नगरकोट के ज्वालामुखी मंदिर को तोड़ दिया था। जिस प्रकार ग्यासुद्दीन तुगलक ने सिद्दीमौला नामक ब्राह्मण को जीवित जला दिया। उसी प्रकार इसने भी अपने धर्म की व्याख्या करने पर एक ब्राह्मण को जला दिया था।
- ☞ यह एकमात्र सुल्तान है, जिसने ब्राह्मणों से भी जजिया कर वसूल किया।

#### **ग्यासुद्दीन तुगलक-II (1388-1394):**

- ☞ फिरोजशाह तुगलक के बाद ग्यासुद्दीन तुगलक-II शासक बना। इसके बाद अबुबक्र गद्दी पर आया और इसके बाद क्रमानुसार, नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह, हुमायूँ ( अलाउद्दीन सिकन्दरशाह ) और इसके बाद नासिरुद्दीन महमूद शाह आया।

#### **नासिरुद्दीन महमूद शाह (1394-1413):**

- ☞ यह तुगलक वंश का अंतिम शासक था।
- ☞ इसके समय में मंगोल नेता तैमुरलंग ने 1398 में भारत पर आक्रमण किया और तुगलक वंश का अंत हुआ।
- ☞ इसके समय में जौनपुर में स्वतंत्र शर्की वंश की स्थापना हुआ।
- ☞ इसकी मृत्यु के बाद गद्दी प्राप्त करने के लिए दौलत खाँ लोदी और खिज़्र खाँ में संघर्ष हुआ। इसमें खिज़्र खाँ विजयी हुआ और इसने सैय्यद वंश को स्थापित कर दिया।